मौत

एक अटल हक़ीक़त

51

बिस्मिल्लाहिर्रहमानिर्रहीम

शुरू अल्लाह के नाम से जो बड़ा मेहरबान निहायत रहम वाला है। सब तारीफ़े अल्लाह तआला के लिये हैं जो सारे जहानों का पालनहार है। हम उसी की तारीफ करते हैं और उसी से मदद और माफी चाहते हैं। अल्लाह की लातादाद सलामती, रहमतें और बरकतें नाज़िल हों मुहम्मद सल्ल. पर, आप की आल व औलाद और असहाब रज़ि. पर। व बअद!

मौत एक अटल हक़ीक़त है जो हर ज़िन्दा पर आती है। बड़े पर भी और छोटे पर भी। मर्द पर भी और औरत पर भी। नेक पर भी और बद पर भी। मालदार पर भी और ग़रीब पर भी और जिस पर आती है वह न तो ख़ुद इससे बच सकता है और न उसके आस–पास मौजूद लोग उसे मौत से बचा सकते है। अल ग़रज़ किसी को मौत से छुटकारा नहीं। कोई ताक़तवर व सहतमन्द हो जब भी या कमज़ोर व बीमार हो तब भी। हर हाल में हर एक को मौत का मज़ा चखना ही है।

इशार्दे बारी तआला है ''(ऐ नबी सल्ल.!) आप से पहले किसी इन्सान को भी हमने हमेशगी नहीं दी। अगर आप फ़ौत हो गये तो क्या वह हमेशा के लिए ज़िन्दा रहेंगे? हर जानदार को मौत का मज़ा चखना ही हैं।'' (अम्बिया–आयत–34–35)

मौत एक ऐसी चीज़ है जो अपने तय वक्त पर ही आती है। न एक लम्हा पहले और न एक लम्हा बाद। इसलिए कि '' जब किसी का तय शुदा वक़्त आ जाता है तो उसे अल्लाह हरगि़ज मोहलत नहीं देता।'' (मुनाफ़िक़ून–आयत–11) किसी इन्सान को न मौत का वक़्त मालूम है और न उसे यह पता कि कहां आएगी? अपनी मौत के मुक़र्ररा वक़्त पर जो जिस हालत में होगा और जहां होगा, उसे मौत वहां आ कर रहेगी। क्योंकि ''कोई (भी) नहीं जानता कि वह कल क्या कुछ करेगा? न ही कोई यह जानता है कि वह किस ज़मीन पर मरेगा।''(लुक़मान–आयत–34)

''तुम जहां कहीं भी होगे, मौत तुम्हें वहां आ पकड़ेगी। गो तुम मज़बूत क़िलो में हो।'' (निसा–आयत–78)

मौत से कोई भाग नहीं सकता– ''कह दीजिए कि जिस मौत से तुम भाग

रहे हो, वह तुम्हें पहुंच कर रहेगी। फिर तुम (सब) उस ज़ात की तरफ़ लौटाए जाओंगे जो हर छिपी और हर ज़ाहिर चीज़ का जानने वाला है। वह तुम्हें तुम्हारे किये हुए सब कामों के बारे में बताएगा।'' (जुमआ–आयत–8)

और यह कि ''जो कुछ हमने तुम्हें दे रखा है। उसमें से मौत के आने से पहले (अल्लाह की राह में) ख़र्च कर लो। (वरना जब मौत आ जाएगी तो अफ़सोस करते हुए) कहेगा–ऐ मेरे रब ! मुझे थोड़ी देर के लिए मोहलत क्यों न दी कि मैं सदक़ा कर लेता और नेक लोगों में से हो जाता।'' (मुनाफ़िक़ून–आयत–10)

मौत की याद

मौत को हर वक्त याद रखना चाहिये और उससे बे परवाह नहीं होना चाहिये। हर शख़्स को अपने उन रिश्तेदारों, दोस्तों और पड़ोसियों के बारे में सोचना चाहिये जो कल तक इस दुनिया में उसके साथ थे मगर आज मिटटी के ढ़ेर तले दब चुके हैं। बड़ी हैरत है उस शख़्स पर जो अपने कन्धों पर कई जनाज़े उठा चुका हों। अपने हाथों से कई फ़ौत शुदा लोगों को दफ़न कर चुका हो। अपनी आंखो से क़ब्रिस्तान के कई खोफ़नाक मनाज़िर देख चुका हो। अपने कानों से कई लोगों की अचानत मौत के वाक़िआत सुन चुका हो और फ़िर अपनी मौत से ग़ाफ़िल रहे। जबकि अल्लाह के रसूल सल्ल. का फ़रमान है ''लज़्ज़तो को खत्म कर देने वाली चीज़ यानि मौत को ज़्यादा से ज़्यादा याद किया करो। क्योंकि जो शख़्स भी उसे तगंहाली में याद करता है, अल्लाह तआला उस शख्स को खुशहाल बना देता है।'' (इब्ने हुब्बान–सही अली जामेअ–1211)

और यह कि ''मोमिनों में सबसे अफ़ज़ल वह है जो उनमें सबसे अच्छे अखलाक वाला है और सबसे ज़्यादा अक़लमन्द वह है जो उनमें सबसे ज़्यादा मौत को याद करने वाला और मौत के बाद आने वाले मामलात की सबसे ज़्यादा तैयारी करने वाला हो।'' (इब्नेमाजा–4259)

''तुम क़ब्रिस्तान की ज़ियारत किया करो। क्योंकि यह (क़ब्रें) मौत की याद दिलाती हैं।'' (मुस्लिम–2259)

कभी कभार क़ब्रो की ज़ियारत की गरज़ से क़ब्रिस्तान जाते रहना चाहिये ताकि इबरत हासिल हो और मौत याद रहे। ताकि अपने अन्जाम को याद करके सीधी राह पर आ जाया जाए और अगर पहले ही से सीधी राह पर है तो मज़बूती के साथ उस पर चलता रहे।

मौत से ग़फ़लत क्यों?

आख़िरत का सफ़र मौत से शुरू होता है और इसकी पहली मन्जिल क़ब्र है। एक तंग और अन्धेरी कोठरी । कि जहां न कोई दोस्त काम आएगा और न औलाद या रिश्तेदार साथ देंगे। फिर इसके बाद आने वाली सभी मन्ज़िले इससे भी ज़्यादा संगीन होगी। फिर भी हम है कि खौफनाक़ सफ़र से ग़ाफिल हैं। आखिर क्यों मौत का ख्याल हमें नहीं झिंझोड़ता? क्यों हम मौत और उसके बाद आने वाले मराहिल की तैयारी नहीं करते?

बज़ाहिर इसकी दो वजहें नज़र आती हैं। (1) दुनिया की मुहब्बत और (2) जहालत। दुनिया की मुहब्बत और उसकी लज़्ज़तों व शहवतों में हम इस क़दर गर्क़ हो चुके हैं कि कभी इस बारे में सोचा ही नहीं कि जिस तरह हमारे बाप–दादा,दोस्त,पड़ोसी और रिश्तेदार इस दुनिया को छोड़कर चले गये, उसी तरह हमें भी इस दुनिया को अलविदा कह देना है।

अल्लाह के रसूल सल्ल. का इर्शाद है ''दो चीजें ऐसी हैं, जिनके बारे में बूढ़े शख़्स का दिल हमेशा जवान रहता है– 1 दुनिया से मुहब्बत और (2) लम्बी–लम्बी उम्मीदें। (बुख़ारी–6421)

इसलिए ''ऐ इब्ने आदम। तुम अमल इस तरह करो कि जैसे तुम अल्लाह को देख रहे हो और अपने आप को मुर्दो में शुमार करो। (साथ ही) मज़लूम की बद दुआ से बचो।'' मुसनद अहमद–सही अल जामेअ–1157)

मौत से ग़फ़लत की दूसरी वजह ''जहालत'' का मतलब यह है कि कई लोग अपनी जवानी से धोखा खा जाते हैं और वो यह समझते हैं कि मौत तो बुढ़ापे में आती है। बस यही सोच उन्हें मौत से ला परवाह कर देती है। हालांकि अगर वोह अपने आस–पास नज़र दौड़ाए तो उन्हें बूढ़े लोग जवानों के मुक़ाबले कम ही नजर आएंगे जो इस बात की दलील है कि ज़्यादातर लोग बुढ़ापे से पहले ही मौत का शिकार बन जाते हैं। कई लोग अपनी अच्छी सेहत के धोखे में आ कर यह सोचते है कि मौत से पहले तो बीमारी आती है। हालांकि अगर वह अपने आस–पास रहने वालों का जायेज़ा ले तो यह समझ जाए कि कई लोग सेहतमन्द होने के बावजूद अचानक इस दुनिया से रूखसत हो जाते हैं तो मौत अचानक हम पर भी आ सकती है।

मौत की सख्तियां

अल्लाह तआला ने मौत की सख्तियों का ज़िक्र इस तरह किया है

1. मौत की सख्ती हक़ के साथ आ चुकी (क़ाफ़–आयत–19)
2. ''अगर आप उस वक्त देखें जबकि यह ज़ालिम लोग मौत की सख्तियों में होगें।'' (आनआम–आयत–93)
3. ''पस!जबकि रूह नरख़रे तक पहुंच जाए।'' (वाक़िआ–आयत–83)
4. ''हरगिज़ नहीं! जब रूह हंसली तक पहुंच जाए।'' (क़यामा–आयत–26)

जिस वक्त् इन्सान पर मौत आती है, वह लम्हा आसान नहीं बल्कि इन्तेहाई मुश्किल और ज़िन्दगी का सबसे सख्त लम्हा होता है। आएशा रज़ि. का बयान है कि ''जब नबी सल्ल. फ़ौत हुए तो (आप का सर मुबारक) मेरी ठोड़ी और हंसली के बीच था। जब से मैंने आप सल्ल. की मौत को देखा है। उसके बाद से में किसी की मौत की संख्ती को ना पसन्द नहीं करती।'' (बुख़ारी–4446)

मतलब यह कि आप सल्ल. की मौत की सख़्ती को देखकर मुझे अब किसी की भी मौत की सख्ती पर ताज्जुब नहीं होता। इसलिए हर किसी को चाहिये कि मौत के कड़वे घूंट को पीने का वक्त आने से पहले सांस और दिल की धड़कन के रूक जाने से पहले और क़ब्र का सफ़र शुरू करने से पहले अपनी ग़फ़लत से बाहर निकलें और मौत को याद करें व उसके बाद के मराहिल की तैयारी में लग जाएं।

नेक व बद की मौत में फ़र्क़

जिस तरह नेक व बद की ज़िन्दगी और अल्लाह के फ़रमाबरदार और ना फ़रमान की ज़िन्दगी एक जैसी नहीं होती। उसी तरह दोनों की मौत में भी बड़ा फ़र्क़ होता है। इर्शादे बारी तआला है ''क्या बुरे काम करने वालों को यह गुमान है कि हम उन्हें उन लोगों जैसा कर देंगे जो ईमान लाए और नेक आमाल किये? क्या उनका मरना–जीना एक जैसा होगा? ग़लत है उनका ऐसा सोचना।'' (जासिया–आयत–21) ''ऐ इत्मीनान पाने वाली रूह! तू अपने रब की तरफ़ लौट चल इस तरह कि तू उससे राज़ी और वह तुझसे खुश। मेरे बन्दों में दाख़िल हो जा और मेरी जन्नत में चली आ।'' (फ़ज्र, आयत–27 से 30)

''और अगर आप उस वक्त देखें जब कि यह ज़ालिम लोग मौत की सख़्तियों में होते है और हमारे फ़रिश्ते अपने हाथ बढ़ाकर उनसे कह रहे होते है कि अपनी जाने निकालों। आज तुम्हें ज़िल्लत की सज़ा दी जाएगी। (अनआम–आयत–93)

और यह कि ''उनकी कैसी दुर्गत होगी? जब फ़रिश्ते उनकी रूह क़ब्ज़

करते हुए उनके चेहरे व कूल्हों पर मारेंगे।'' (मुहम्मद–27)

''जिनकी जाने फ़रिश्ते इस हाल में क़ब्ज़ करते हैं कि वह पाक–साफ हो तो उन्हें कहते हैं तुम्हारे लिए सलामती ही सलामती है जाओ जन्नत में चले जाओं। अपने उन आमाल के बदले जो तुम करते थे।(नहल–आयत–32)

सारांश

हर इन्सान पर लाज़िम है कि हर वक़्त मौत के लिए तैयार रहे, कभी उससे ग़ाफिल न हो। अगर किसी ने ज़िन्दगी का बड़ा हिस्सा अल्लाह की ना फ़रमानी करते हुए गुज़ार दिया है तो फ़ौरन तौबा करे और अल्लाह की सीधी राह पर आ जाए अल्लाह माफ़ कारने वाला और अपने बन्दों पर रहम करने वाला है। इर्शादे बारी तआला है ''क्या हमने तुम्हें इतनी उम्र नहीं दी थी कि अगर कोई नसीहत हासिल करना चाहता तो कर लेता।'' (फ़ातिर–37)

और यह कि ''यहां तक कि वह अपनी पुख़्तगी और 40 साल की उम्र को पहुंचा तो कहने लगा ऐ मेरे रब! मुझे तौफ़ीक़ दे कि तेरी उस नैमत का शुक्र बजा लाऊं जो तूने मुझ पर और मेरे मां–बाप पर की है।'' (अहक़ाफ–आयत–15)

लिहाजा जिस शख़्स के सर और चेहरे से बुढ़ापा झलकने लगे और 40 साल की उम्र भी पार कर लें। फिर भी न तो तौबा करे और न नेक आमाल करके आख़िरत की तैयारी करे। बल्कि इसी हाल में अचानक उसे मौत आ जाएं तो वह किसी को मलामत करने के बजाए, अपने आप ही को मलामत करे। क्योंकि ''अल्लाह ने उस शख़्स के लिए कोई उज्र नहीं छोड़ा जिसकी मौत को इतना मुअख़्ख़र किया कि वह 60 साल की उम्र को पहुंच गया।'' (बुख़ारी–6419) अगर कोई शख़्स अल्लाह के फ़ज़्लों करम से अब तक सिराते मुस्तक़ीम पर चलता रहा है और गुनाहों पर अल्लाह से माफ़ी मांगता रहा है तो वह अल्लाह से पुर उम्मीद रहें और अपने आप को संवारने की बराबर कोशिशें करता रहें क्योंकि आमाल का दारोंमदार ख़ात्में पर है।

आमाल का दारो–मदार–ख़ात्में पर

अल्लाह के रसूल सल्ल. ने फ़रमाया ''बेशक! एक शख़्स जन्नत वाला अमल करता है हालांकि वह अहले जहन्नम में से होता है और एक शख़्स बज़ाहिर अहले जहन्नम वाला अमल करता है जबकि वह जन्नत वालों में से होता है। आमाल का दारोमदार ख़ात्मों पर होता है।''

(बुख़ारी–2898,6607)
मतलब यह कि जिस अमल पर इन्सान की मौत होती है। मौत के बाद उसी के मुताबिक उससे सुलूक किया जाता है। अगर ईमान व आमाले सालेहा पर मौत आती है तो क़ब्र मे उसके साथ अच्छा सुलूक किया जाता है और उसकी क़ब्र को जन्नत का बाग़ बना दिया जाता है (अल्लाह न करें) किसी की मौत अगर कुफ्र या शिर्क पर या गुनाहे कबीरा व अल्लाह की नाफ़रमानी करते हुए आती है तो क़ब्र में उसके साथ अच्छा सुलूक नहीं किया जाता। बल्कि उसकी क़ब्र को जहन्नम का गढ़ा बना दिया जाता है। इसलिए कि ''जिस अमल पर इन्सान को मौत आती है, उसी पर अल्लाह उसे (क़यामत के दिन) उठाएगा।'' (सही अल जामेअ–6543) और ''जिस शख्स की आख़िरी बात ''ला इलाहा इल्ललल्लाह'' हो वह, जन्नत में दाख़िल होगा।'' (अबुदाऊद–3116–सही)

इसी वजह से नबी ए मुहतरम मुहम्मद सल्लललाहु अलैहि व सल्लम ख़ुद हमेशा इताअत व फ़रमाबरदारी और ईमान व अमले सालेह पर साबित क़दमी की दुआ अल्लाह से यूं किया करते थे'' या मुक़ल्लिबुल कुलूब सब्बित क़ल्बी अला तआतिक'' यानि ऐ दिलों को फेरने वाले! मेरा दिल अपनी इताअत पर जमाए रखना।'' (मुसनद अहमद–24604–सही)

हमें भी बुरे ख़ात्मे से डरना चाहिये। इसलिए कि जो शख़्स डरता है, वही अपनी इस्लाह की कोशिश भी करता है और जो कोशिशें और दुआएं करता रहता है तो अल्लाह तआला भी उसे हुस्ने ख़ात्मा नसीब करता है। अल्लाह के रसूल सल्ल. ने फ़रमाया ''जिस शख़्स को खौफ़ होता है वह रात भर चलता रहता है और जौ सारी रात चलता है वह मन्जिल पर पहुंच जाता है। खबरदार! अल्लाह का सौदा मंहगा है और अल्लाह का सौदा जन्नत है।'' (तिर्मिज़ी–2450–सही)

अल्लाह तआला से दुआ है कि वह हमें नेक लोगों की मौत नसीब करे और हमारा ख़ात्मा ईमान पर हो। वह हमारे दिलों को अपनी फ़रमाबरदारी पर क़ायम रखे और हमारे सभी गुनाहों और खताओं को बख़्श दे।

आमीन!

मारवूज़
ज़ादुल ख़तीब
अज़–डा. मुहम्मद इसहाक ज़ाहिद

आपका दीनी भाई
मुहम्मद सईद
मो. 9214836639
9887239649

दिनांक 30/05/2012